www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 36
सृष्टि संवत् 1960853114
8 दिसम्बर 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 36, 5/8 दिसम्बर 2013 तदनुसार 23 माघ सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आओ! वेदोद्यान चलें

ले० श्री भद्रसेन 182 शालीमार नगर होशियारपुर

(गतांक से आगे)

9. वेद की वर्णन शैली

यह सर्वमान्य बात है, कि वेद संसार के साहित्य की सब से पहली रचना है। इनकी भाषा वैदिक संस्कृत है, जो कि लौकिक संस्कृत की दृष्टि से भी अनेक रूपों में भिन्न है। जैसे कि नाम पदों, क्रियापदों, कृदन्ती पदों के रूपों में अनेकत्र भिन्नता मिलती है। यथा-लौकिक संस्कृत में देव शब्द का तृतीया विभक्ति के बहुवचन में देवैः एक ही रूप होता है, पर वेद में देवैः और देवेभिः दोनों रूप मिलते हैं। इसीलिए पाणिनीय व्याकरण में 'बहुलं छन्दसि' सूत्र ग्यारह बार आया है। जिसका भाव है, कि इन-इन स्थानों पर लौकिक की अपेक्षा वेद में भिन्नता मिलती है। इसी प्रकार तीनों कालों में होने वाले लकारों में कुछ भिन्नता है। ऐसे ही शब्दों के अर्थ की दृष्टि से अनेक भेद मिलते हैं।

वेद एक पद्यमयी रचना है, इसी लिए वेद का नाम छन्द भी है। यहां अनेक छन्दों के मन्त्र प्राप्त होते हैं। प्रत्येक छन्द के पाद और उनकी वर्ण संख्या अलग-अलग होती है। जैसे कि गायत्री छन्द में आठ-आठ वर्ण के तीन पाद होते हैं और अनुष्टुप में आठ-आठ वर्ण के चार पाद हैं। पद्य के अन्दर निश्चित वर्ण होने से कई बार भाव की पूर्ति के लिए अध्याहार से (ऊपर से कुछ और शब्द-अर्थ लेकर) काम चलाया जाता है।

कोई वक्ता अपनी बात सीधे ढंग (अभिधा वृत्ति) से कहता है, तो दूसरा लक्षणा से तो कोई व्यंजना से कहता है, क्योंकि तभी बात में अनोखापन (-काव्यत्व) आता है। प्रत्येक कवि अपनी रचना में शब्दों द्वारा किसी बात, अर्थ, भाव को कहता है। वह उसमें अनोखापन लाने के लिए काव्यलक्षण के अनुरूप अपनी कल्पना से शब्द-अर्थ में गुण-रस-रीति-अलंकार-ध्वनि की भी पुट देता है। इससे रचना जहां सहृदयों के लिए आह्लादक, आकर्षक हो जाती है, वहां भाव और अर्थ को समझने के लिए 'गहरे पानी पैठना' भी आवश्यक हो जाता है। इसीलिए ही वैशेषिक दर्शनकार ने कहा है-'बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे 6, 1, 1, अर्थात् वेद की रचना कवि बुद्धि सम्पन्न है, अतः उसको समझने के लिए तदनुरूप बुद्धि का व्यवहार अवश्य करना चाहिए।'

निरुक्तकार महर्षि यास्क ने इस सम्बन्ध में अपने विचार देते हुए कहा है-जैसे चित्रकला आदि में अभ्यास के साथ विषय की जानकारी रखने वाला अधिक प्रवीण होता है। ऐसे ही गुरुपरम्परा से पढ़ी जाने वाली (वेद जैसी) विद्याओं में अधिक से अधिक शास्त्र ज्ञान रखने वाला अधिक प्रशंसनीय, सफल रहता है ऐसी भावना को ध्यान में रखकर ही यह उक्ति कही जाती है-बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति।

वेद एक धर्मग्रन्थ है और धर्मग्रन्थ का सामान्यतः अभिधावृत्ति का होना एक स्वाभाविक अपेक्षा हो जाती है। धर्मग्रन्थ में यत्र-तत्र अपने इष्ट के प्रति श्रद्धा प्रदर्शन, भक्ति-भाव होना एक सहज प्रवृत्ति है। अतएव निरुक्तकार ने एक प्रसंग में कहा है-बहुभक्तिवादीनि हि ब्राह्मणानि भवन्ति 7, 7 अर्थात् ब्राह्मण ग्रन्थों में बहुत भक्ति-भावना भरा वर्णन है। भक्ति में अपने इष्ट को बहुत नामों (गुणों) से पुकारा जाता है। यह चाहे ब्राह्मण ग्रन्थों के लिए कथन है। पुनरपि वास्तविक स्थिति तो यही है, कि भक्ति, श्रद्धा से सम्बन्ध रखने वाले सभी धर्मग्रन्थों पर यही स्थिति लागू होती है। अतएव वेद में जहां सबसे अधिक इष्ट की स्तुति (-वर्णन), गीत हैं, उससे अनेक तरह की प्रार्थनायें की जाती हैं, वहीं उपदेश, सन्देश, आज्ञा के ढंग की भी चर्चा मिलती है।

प्रत्येक वेद का पढ़ने वाला वेद को पढ़ने के बाद यह अनुभव करता है, कि वेदों में अग्नि, इन्द्र, विष्णु, वरुण आदि को आधार बना कर मिलती-जुलती सी स्तुति, प्रार्थना की गई है। जैसे कि-अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ ऋ० 1, 1, 1, मैं अग्नि की स्तुति करता हूं, जो कि यज्ञ का पुरोहित (आगे रखे जाने वाला), देव, प्रत्येक ऋतु में यज्ञ का कर्ता, बुलाने वाला और रत्नों का धारण करने वाला है।

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके॥

ऋ० 1, 25, 19॥

हे वरुण! मेरी इस पुकार को सुनो। आज ही सुखी करो। रक्षा चाहने वाला मैं आप को पुकारता हूं।

वैदिक परम्परा में अग्नि, इन्द्र को देवता शब्द से पुकारा गया है। वेद का वर्णन जहां इन अग्नि, आदि को स्पष्ट इष्टदेव के रूप में प्रस्तुत करता है, वहां ये शब्द अनेकधा किसी प्राकृतिक तत्त्व, पदार्थ या किसी भाव के वाचक भी लगते हैं।

निरुक्तकार ने इस प्रसंग में देवता को स्पष्ट करते हुए कहा है, कि जिनकी प्रधानता, मुख्य रूप से स्तुति की गई है, वही देवता है। जिस चीज़ को चाहने वाला ऋषि उसके दाता के रूप में जिस देवता के लिए जिस मन्त्र से स्तुति करता है, वह उस मन्त्र का देवता है। मन्त्र में जिस का वर्णन है, वह भी देवता कहलाता है। अतः इष्ट की स्तुति और प्रार्थना से देवता पद का विशेष सम्बन्ध है। हां, अनेक मन्त्रों में व्यवहार की वस्तुओं-रथ, इषु, मेखला आदि की भी चर्चा मिलती है। बृहद देवता में भी, 1, 2 से 98 तक ऐसा ही वर्णन आया है।

ये अग्नि, इन्द्र, विष्णु, सोम आदि देवता नाम क्या किसी एक ही इष्टदेव के वाचक हैं या अनेकों के अलग-अलग नाम हैं। इस सम्बन्ध में किसी दावे से बात करना कठिन है, क्योंकि अनेकत्र इनके साथ द्विवचन और बहुवचन का प्रयोग भी मिलता है, तो कहीं-कहीं स्पष्ट रूप से कहा है, कि ये सब एक के ही अनेक नाम, विशेषण हैं। यह ठीक है कि जहां प्राकृतिक तत्त्वों का विवेचन है, वहां तो द्विवचन, बहुवचन की व्यवस्था सरलता से जच जाती है। पर इष्टदेव के प्रसंग में वे स्थल विशेष विचारणीय बन जाते हैं। (क्रमशः)

www.thearyasamaj.org

ईश्वर कोई भौतिक शक्ति नहीं है

-ले० श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक' मु० पो० मुराई, जिला-वीरभूम, (पं. बंगाल)

ईश्वर सर्वगुण सम्पन्न एक अलग प्रकार शक्तिमान है। उदाहरण के लिये चैतन्य से ही सारे संसार के कार्य सम्पन्न हो रहे हैं। एक से एक कृत्रिम यत्न भी एक उसी निरवयव चैतन्य से सक्रिय हो रहे हैं, किन्तु चैतन्य कोई भौतिक पदार्थ नहीं है। कोई भी विद्या मनुष्य बिना चैतन्य के प्राप्त नहीं कर सकता है। इसलिये चैतन्य ही सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोपरि है।

परमात्मा, नये वैज्ञानिकों की खोज, परमाणुओं को सृजन कारक द्रव्यमान बनाने वाला कोई 'कण' नहीं है। ईश्वर सर्वव्यापक है उसकी कोई गति नहीं है। जैसे शरीर में आत्मा विद्यमान है पर आत्मा नहीं चलता, उसकी शक्ति से शरीर चलता है। इसी प्रकार सारी सृष्टि में ईश्वर विद्यमान है, पर वह गति नहीं करता, उसके द्वारा सारी सृष्टि एवं उनके परमाणु गति करते हैं।

ईश्वर के सम्बन्ध में वेद कहता है कि-

'विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतो मुखो विश्वतोवाहुरुतविश्वतस्यात्।

संबाहुभ्यांधमति संपनत्रैर्द्यावाभूमि जन्मन् देव एकः॥'

(यजु० 17.19)

जो सूक्ष्म से सूक्ष्म, महान् से महान् निराकार अर्थात् अकार रहित, अनन्तसामर्थ वाला और सर्वव्यापक देव=अद्वितीय परमात्मा है, वह अतिसूक्ष्म, कारण प्रकृति से स्थूल कार्य जगत के रचने और नष्ट करने में समर्थ है। जो उसकी उपासना को छोड़कर अन्य की उपासना करता है उससे भिन्न संसार में कौन अभागा है।

जैसे प्रिय शरीर के सारे प्राण हृदय से और हृदय की कृपा आत्मा से जुड़ी हुई है वैसे ही ब्रह्माण्ड की सारी सृष्टियों की शक्तियां सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान परमेश्वर से जुड़ी है। जैसे ईश्वर प्रद्यत्त ऋत और 'तप' की मूल शक्ति से सारे ब्रह्माण्ड की रचना हुई है वैसे ही सारी मौलिक रचनाओं की शक्तियाँ सब एक होकर अपनी उद्गम स्थान एकेश्वर सर्व शक्तिमान से मिली हुई है।

जैसे सारे संसार के कार्य चैतन्य के माध्यम से हो रहे हैं, वैसे ही सारे ब्रह्माण्ड में जो क्रियायें हो रही हैं वे सब तेजोमय परमेश्वर के द्वारा ही हो रही है।

परमेश्वर प्राण की तरह सर्वत्र पूर्ण है, उसकी गति नहीं है। गति सदैव साकार एक देशी में होती है, सर्वदेशी सर्वव्यापक में नहीं होती। ''अनेजत'' (यजु० 40,4) परमात्मा हिलता नहीं, गति नहीं करता। सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा देश, काल व कारणत्व के बन्धन से परे है, उसमें गति संभव नहीं। अतः सर्वव्यापि परमेश्वर का कहीं आना जाना सिद्ध नहीं होता।

'अनिच्छये तुरगातु जीव में जद्ध्रुव मध्यमआपस्त्यानाम्....'

(ऋग 01,164,30)

अर्थात-जो चलायमान पदार्थों में स्थिर अनित्यों में नित्य और व्याप्यों में व्यापक ईश्वर है। उसकी व्यापकता से रहित अतिसूक्ष्म कोई वस्तु भी नहीं है।

ईश्वर ने जिनके लिये जो नियम स्थापित किये हैं, उनका उलंघन करने में कोई भी समर्थ नहीं है। ईश्वर के विज्ञान स्वरूप होने से सृष्टि में जितनी क्रियाएं हो रही हैं सब विशेष मात्रा के अनुसार बुद्धिपूर्वक हो रही है, उसके नियम को कोई भी भंग करके मनमानी ढंग से जैसे वैसे नहीं कर सकता।

वेद भी कहता है-'प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरोगिरिष्ठाः।

यस्मोरुषु भिषुविक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

(ऋ० 1,154,2)'

कोई भी पदार्थ ईश्वर की सृष्टि के नियमों और क्रम का उल्लंघन नहीं कर सकता है। जो धार्मिक को मित्र के समान आनन्द देने वाला, दुष्टों को सिंह के समान भय देने वाला और न्याय आदि गुणों को धारण करने वाला परमात्मा है, वहीं सब का अधिष्ठाता और न्यायाधीश है, ऐसा जानना चाहिये।

भूमि में जैसा बीज बोया जाता है वह वैसा ही उत्पन्न होता है, अब कौन बीज के कैसे पत्ते, फूल, फल बनेंगे, सृष्टि रचयिता परमेश्वर ने पहले से ही उनका आकार प्रकार निर्धारित कर दिया था कि उनके बीजों के पत्ते फूल फल और उनके गुण अमुक प्रकार के उत्पन्न होंगे।

मनुष्य को ही देखिये इनके शरीर में जितने उपकरण लगे हुए हैं सब उच्च बुद्धिपूर्वक स्वयं है। यह सब वैज्ञानिकों के आदि गुरु सर्वज्ञ परमेश्वर ने मानव आदि प्राणियों की सांचा को पहले ही तैयार कर दिया था। उसके पश्चात जहा मैथुनी सृष्टि आरम्भ हुई तब उन्हीं सांचों में ढल-ढल कर नित्य नये शरीर बनने लगे। सभी प्राणी अपने बच्चों के प्रति प्यार करते हैं, यह श्रद्धा, प्रेम, विश्वास, स्मरण, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, काम, क्रोध, लोभ, भक्ति, अहिंसा, हिंसा, मन बुद्धि चित्त, चेतन तथा ज्ञान और सुख-दुःख का अनुभव यह सब दृष्टि गोचर नहीं होते, पर जब आत्मा शरीर धारण करता है तो उसके उपरोक्त सारे गुण उस शरीर के माध्यम से सुख-दुःखादि का ज्ञान सबको होने लगता है। इसी प्रकार परमात्मा जब सृष्टियों की रचना करता है तो उसके सारे वैभव-दृष्टिगोचर होने लगते हैं।

हम पहले लिख आये हैं कि चैतन्य कोई भौतिक पदार्थ नहीं है। भौतिक पदार्थ क्रमशः एक के बाद एक उत्पन्न होता है, जैसे पौधा पहले अंकुर, उसके बाद पत्ता, उनके पश्चात् फूल, और फल उत्पन्न होता है। परन्तु शिशु जब जन्म लेता है तो वह चैतन्य गुणों से युक्त होता है, इससे सिद्ध होता है चैतन्य मूल का गुण नहीं है आत्मा का गुण है।

यदि भौतिक होता तो जो विचार उसने स्मरण कर रखा है, उसमें परिवर्तन हो जाता, उसे पुनः स्मरण न होता, किन्तु ऐसी बात नहीं है, वर्षों बाद भी जान लेता है कि यह वही है जिसे मैंने अमुक समय में देखा था।

भौतिक विज्ञान चेतन के सम्बन्ध में दो प्रकार की बात करता है ''कल्पना, विचार, ज्ञान को मानव चेतन (मस्तिष्क) पर एक ऐसे वास्तविक भौतिक जगत का मानस-प्रतिबिम्ब चमक मानता है जिस की सत्ता हमारी चेतना या इच्छा से बिल्कुल स्वतन्त्र है।

एक जगह लिखा है कि ''चैतन्यता भूत से उत्पन्न होती है, किन्तु वह स्वयं भूत नहीं है।'' जब यह चैतन्यता भूत अथवा भूत का गुण नहीं है, तब उसकी उत्पत्ति ही क्यों होगी ? यदि होगी तो वह भी प्राकृतिक होने से उसमे भी जड़त्व के लक्षण (रूप, रस, गन्धादि के कण) पाये जायेंगे जैसा कि यौगिक एवं रासायनिक पदार्थों में पाया जाता है। किन्तु चैतन्य असंग है, इसलिये उसकी उत्पत्ति की कल्पना मूल है। जो अत्यन्त सूक्ष्म होता है जैसे परमाणु उसकी उत्पत्ति नहीं होती बल्कि प्रोप्लाज्म आदि तत्वों के गुण मानव मस्तिष्क को इस योग्य बना देते है ताकि उस अत्यन्त सूक्ष्म अभौतिक चेतन की चमक उसके मानस पर पड़ती रहे।

भौतिकवादियों के मत में चेतन प्रोटोप्लाज्म ही है और प्रोटोप्लाज्म में जो शहद की भाँति तरल पदार्थों से ही बना है जो निरे जड़ हैं। ये भौतिक पदार्थ भी इलेक्ट्रोन के न्यूनाधिक मेल से बनता है। एलेक्ट्रोन खण्ड-खण्ड हैं। अतः हमारी देशी भाषा में ये सारे पदार्थ परमाणुओं से ही बन जाते हैं और जीव भी प्राकृतिक परमाणुओं से ही बन जाता है। (वैदिक सम्पत्ति, पृ० 122) किन्तु 12 प्रकार रासायनिक तत्वों से जो चेतनोत्पत्ति का ज्ञान है वह काल्पनिक एवं भ्रान्त है। नेत्र के माध्यम से ही दृष्टा देखता है, पर दृष्टा का उत्पादक नेत्र नहीं है क्योंकि आत्मारूपी दृष्टा ने ही नेत्र को उत्पन्न किया है। तात्पर्य यह कि प्रोटोप्लाज्म आत्मा का उत्पादक नहीं, केवल उसके प्रकाश का माध्यम है, जो उसी के द्वारा उसकी भी उत्पत्ति होती है। इसका प्रमाण यह है कि जीवात्मा के न रहने पर वह जड़ जम जाता है।

यदि प्रोटोप्लाज्म से चेतन बनता तो विज्ञानवेत्ता कब का एक मानव शरीर का निर्माण कर लेता और मृतक को जीवित कर लेता। अतः शरीर के करोड़ों और प्रोटोप्लाज्म, कलरस आदि जीवात्मा को सूक्ष्म शरीर द्वारा बनते है। यह सब अपने गुणों का विकास प्राकृतिक नियम के अनुसार करता है।

प्रश्न-आत्मा का चैतन्य गुण तो भौतिक मस्तिष्क तन्तुओं के माध्यम से प्रकट होता है परमात्मा बिना भौतिक साधन के वह चैतन्य कैसे हो सकता है ?

(शेष पृष्ठ 6 पर)

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

मनुष्य का नैतिक जीवन कैसा होना चाहिए

मनन और विवेकशील प्राणी को मनुष्य कहते हैं। विवेकशून्य मनुष्य पशु के समान होता है। जिसमें भले बुरे की पहचान नहीं होती। मनुष्य को मनुष्य बनने के लिए सदैव विवेक से काम लेकर बुराई से बचना और भलाई में प्रवृत्त रहना चाहिए। ऐसा करने से ही मनुष्य मनुष्य कहलाने का अधिकारी होता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसे सीखने और जानने से ही ज्ञान प्राप्त होता है। उसका ज्ञान स्वाभाविक और एक समान रहने वाला नहीं होता। यही कारण है कि वह अधिक से अधिक उन्नत और अवनत हो जाता है। बिना समाज के वह न तो पालित-पोषित हो सकता है और न विकसित। इस दृष्टि से वह सर्वथा समाज पर आश्रित रहता है। अच्छे समाज में रहने पर मनुष्य अच्छा और बुरे समाज में रहने पर बुरा बन जाता है। समाज द्वारा संस्कृत और विकसित मनुष्य श्रेष्ठतम और न्याय और नियन्त्रणविहीन मनुष्य भयंकरतम पशु होता है। मनुष्य के सम्यक् विकास के लिए आवश्यक है कि उसके आसपास का समाज और वातावरण उत्तम हो। साधारणतः मनुष्य वातावरण और परिस्थिति का दास होता है परन्तु मनुष्य वही होता है जो इन दोनों को उपयोगी बनाकर मनुष्यत्व के आचरण में तत्पर रहे। कोई मनुष्य अच्छा है या बुरा इसकी सबसे सुगम पहचान यह है कि यह देखा जाए कि वह किस प्रकार के समाज के सम्पर्क में रहता है। यदि वह अच्छे व्यक्तियों के संसर्ग में रहता है तो समझो वह अच्छा है और यदि बुरे व्यक्तियों के संसर्ग में रहता है तो वह बुरा है।

मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए आवश्यक है कि उसका शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास साथ-साथ हो। सब मनुष्यों का यही ध्येय होना चाहिए, उसी में मनुष्य की महत्ता निहित होती है। इसी महत्ता से मनुष्य धर्मात्मा, बुद्धिमान और निर्भीक बना रहता है। इन तीनों के बल पर मनुष्य चिन्ताओं से, परेशानियों और भय से मुक्त हो सकता है। मनुष्य की पहचान उसकी शक्ल सूरत, धन वैभव, वस्त्राभूषण से नहीं अपितु उसके चरित्र से, उसकी बातों से और उसके कार्यों से हुआ करती है। उसका चरित्र और कार्य ऐसा होना चाहिए जिससे उसी के द्वारा मनुष्य की प्रशंसा हो। इसी प्रकार धार्मिक, राजनैतिक और शैक्षणिक की पहचान उन मनुष्यों के द्वारा हुआ करती है जिन्हें ये प्रणालियां बनाया करती हैं। परन्तु आज मनुष्य का आचरण पशु की भांति दिखाई पड़ता है। आज का मनुष्य धन, सम्पति और भोग का दास बना हुआ है। आज मनुष्य की योग्यता, विद्वता, मान-सम्मान का मापदण्ड धन-वैभव बना हुआ है। शिक्षा का लक्ष्य आज जीविकोपार्जन हो गया है। राजनीति जुआ है और स्वार्थियों तथा अवसरवादियों का व्यवसाय बनी हुई है। धर्म रोटी का और लोगों को आपस में लड़ने और मार-काट मचाने का कुटिल राजनीतिज्ञों का साधन बन गया है। उपर्युक्त तीनों प्रणालियां मानव के लिए देन होने के स्थान में अभिशाप सिद्ध हो रही है। आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य का मानव जीवन का लक्ष्य बदलकर स्वस्थ बने जिससे मनुष्य अपनी सृजना को गौरवान्वित कर सके। सबसे बड़ी गड़बड़ मानव की भावना में स्वार्थ वृत्ति के आ जाने से तथा मनुष्य जीवन की उपयोगिता और महत्त्व को न समझने के कारण हुई। पतन का अनुपात विलासिता की आसक्ति के अनुपात में होता है। मनुष्य के स्वार्थी तथा विलासी होने से उसका पतन होता है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए वह बुरे से बुरे कार्य को करने के लिए प्रवृत्त हो जाता है। आज विलासिता और भोगवाद के कारण हमारी संस्कृति भोग प्रधान बन गई है। परमात्मा का डर उसके हृदय से निकल गया, मनुष्य परमात्मा के नियमों की उपेक्षा करके उसे चुनौती देने लग गया। ऐसी अवस्थाओं की कल्पना से भयभीत होकर ही दूरदर्शी तत्त्ववेत्ता यह कहने के लिए बाध्य हुआ कि यदि संसार में ईश्वर न भी होता तो संसार की सुख और शान्ति के लिए उसका आविष्कार करना पड़ता। आज मनुष्य ज्ञान-विज्ञान, कला कौशल, उद्योग-धन्धों, संगठित संस्थाओं, प्रणालियों आदि की दृष्टि से नियन्त्रित और सुव्यवस्थित है। परन्तु प्रश्न यह है कि मनुष्य के ज्ञान का क्या प्रयोग हो रहा है। वह क्या बना हुआ है और क्या कर रहा है। इस प्रश्न का उत्तर बड़ा निराशाजनक है। वह तो अपने निम्नस्तर पर पहुँचा दिखाई देता है। यदि वह अपने ज्ञान-विज्ञान, धन-ऐश्वर्य और कला-कौशल को उच्चतम स्तर की ओर प्रेरित करता तो वह निश्चय ही उन्नति की ओर अग्रसर होता। प्रत्येक मनुष्य में गुण और अवगुण दोनों होते हैं। श्रेष्ठ मनुष्य सदैव मनुष्य के उज्ज्वल पक्ष को सामने रखते हैं, उससे प्रकाश ग्रहण करते हैं और उसका आदर करते हुए अपने साथ उन मनुष्यों की तथा समाज की उन्नति में सुन्दर योग दिया करते हैं जिन मनुष्यों को हम बुरा और पतित कहते हैं। इसलिए श्रेष्ठ मनुष्य को अगर किसी में कोई बुराई नजर आती है तो उससे घृणा करने के बजाय सही मार्ग पर लाने का प्रयास करें, उन्हें सदाचार की शिक्षा दें ताकि वे भी अपने जीवन को उन्नत बना सकें। इन्द्रियों के मन के अधीन, मन के बुद्धि के अधीन और बुद्धि के आत्मा के अधीन होने से मनुष्य का विकास और नियन्त्रण होता है। इस प्रकार के विकास के फलस्वरूप मनुष्य सुन्दरता की अनुभूति का आनन्द उठाता, सत्य से प्रेम करता, बुराई से घृणा करता, सत्कर्म में प्रवृत्त हुआ जीवन को उन्नत बनाता है।

इस संसार से विदा होते समय मनुष्य के साथ कोई वस्तु नहीं जाती केवल उसका चरित्र साथ जाता है। भावी सन्तति के उपकार के लिए मनुष्य जो श्रेष्ठतम सम्पदा छोड़ता है वह उसकी सच्चरित्रता होती है। मनुष्य अपने चरित्र के बल पर संसार को मार्ग दिखा सकता है। मनुष्य का उत्तम जीवन चरित्र प्रकाश स्तम्भ के समान है जो मार्ग से भटके हुए लोगों को सन्मार्ग पथ दिखा सकता है। संसार में जितने भी महापुरूष हुए हैं उनकी महानता का प्रमाण उनका उच्च तथा आदर्श चरित्र था। आदर्श जीवन चरित्र वाला मनुष्य अपने जीवन के चिन्ह उसी प्रकार छोड़ जाता है जिस प्रकार रेत पर चलने से पीछे मनुष्य के पदचिन्ह रह जाते हैं। इसलिए अगर हम अपने जीवन को सफल बनाना चाहते हैं तो हमें अपने नैतिक जीवन को उज्ज्वल बनाना होगा। **-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री**

www.thearyasamaj.org

हे आत्मन्, सावधान !

-ले० रमेश चन्द्र पाहूजा, 541-L, मॉडल टाऊन, यमुना नगर

न जाने क्यों इस भौतिक जगत की चकाचौंध, भागदौड़, कोलाहल के मध्य रहते हुए भी, कुछ खाली-खाली सा, कुछ अधूरा सा लगता है। ईश्वर की महती कृपा है, घर है, सुन्दर परिवार है, जीवन-रूपी यात्रा के लिए सब सुख-साधन भी हैं परन्तु फिर भी आत्मा को एकान्त की तलाश है। ऐसा एकान्त जहाँ मन के संकल्प-विकल्प की गति धीमी पड़ जाये, जहाँ संकल्प-विकल्प को एक दिशा मिल जाये। आईये, दूर कहीं पहाड़ों की वादियों में खो जाते हैं। चारों ओर बादल ही बादल हैं। जैसे ही शीतल पवन का झोंका आता है, बादल की एक घटा शरीर को छू जाती है, ऐसा आभास होता है कि परमपिता परमात्मा ने अपना सारा प्यार, स्नेह ही उडेल दिया हो। आनन्द की एक अनुभूति हो उठती है।

इन्हीं वादियों में, एक ऋषि का आश्रम भी है। आईये, यहाँ देखते हैं क्या-हो रहा है। प्रात: काल की शुभ बेला में, ऋषिवर अपने ब्रह्मचारियों के साथ मिलकर ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ सम्पन्न कर चुके हैं। अग्निहोत्र की सुरभि चारों ओर फैली हुई है। ब्रह्मचारीगण गऊओं को दुह कर दुग्धपान कर चुके हैं। इतने में ऋषिवर एक ब्रह्मचारी को आदेश देते हैं। हे गोपाल! तुम इन गऊओं को अपने निरीक्षण में खोलो, उनकी गिनती करो और वन की ओर प्रस्थान करो। इनको अपनी देख-रेख में ही गति प्रदान करना। ध्यान रखना ये गऊएँ आपस में ही लड़ लहुलुहान न हो जायें। मिल कर रहें, मिल कर घास चरें। ये कहीं दूर घने जंगलों में न निकल जायें। ऐसा न हो कोई शेर इन पर आ झपटे। ऐसा न हो कि कोई गऊ पहाड़ से नीचे गिर जाए और अपनी टाँगें तुड़वा बैठे। सावधान! ये गऊएँ कहीं विषैली घास का सेवन न कर लें। प्रात: से ले कर लौटने तक इन पर कड़ी नज़र रखना। वापिस लौटने के समय इनकी गिनती कर लेना और फिर अपने ही संरक्षण में हाँक कर सुरक्षित आश्रम में वापिस ले आना।

आईये, अब इस चित्रण के आध्यात्मिक पक्ष पर भी चिन्तन-मनन करते हैं। ऋग्वेद में एक बहुत ही सुन्दर, सारगर्भित मन्त्र आता है:

ओ३म् यत् नियानं, न्ययनं, संज्ञानं यत् प्रयाणम्।

आवर्तनं, निवर्तनं, यो गोपा अपि तम् हुवे॥ (ऋग्वेद)॥

इस मन्त्र में आत्मा की उपमा गोपाल से की गई है, शरीर की तुलना गऊशाला से और पाँचों ज्ञान-इन्द्रियों, मन और बुद्धि को गऊएँ कह कर पुकारा गया है। वेदमाता के माध्यम से परमात्मा आदेश दे रहे हैं : हे आत्मन्, हे गोपाल! सावधान! ध्यान रहे कि प्रात: काल जागने के समय से लेकर रात्रिकाल में निद्रा की गोद में जाने तक, तुम्हारी इन्द्रियों के सारे क्रिया-कलाप तुम्हारे ही निरीक्षण और संरक्षण में हों। प्रात: काल का शुभारम्भ प्रभात-वन्दना के मन्त्रों के द्वारा ही हो।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवा-महे, प्रातर्मित्रावरूणा प्रातरश्विना।

प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मण-स्पतिम्, प्रात: सोममुत रूद्रं हुवेम॥

प्रात:काल की शुभबेला में प्रकाश स्वरूप, ज्ञान स्वरूप सब ऐश्वर्यों के दाता, मित्र, वरूण स्वरूप और सर्वव्यापक प्रभु का हम आह्वान करते हैं। प्रात:काल स्मरणीय, सबका पालन पोषण करने वाले, वेद और ब्रह्माण्ड के अधिपति, शान्त स्वरूप और पापियों को रूलाने वाले उस ईश्वर को हम पुकारते हैं। इस प्रकार ब्रह्मयज्ञ से आरम्भ कर, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ हमारी दिनचर्या के अभिन्न अंग हों। हे गोपाल। इन सब इन्द्रियों रूपी गऊओं के सारे कार्य तुम्हारी ही देख-रेख में हों। अपनी जीवन रूपी यज्ञ में ये इन्द्रियाँ, ये सप्त होता: सुन्दर, पवित्र, सुगन्धित, पौष्टिक और हितकारी आहुतियाँ ही डालें ताकि सारे वातावरण में सुरभि ही सुरभि फैल जाए। ये तेरी ज्ञान-इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि तेरे वश में हों और उनका आपस में भी ताल-मेल हो। जैसे तुम आदेश दो, बुद्धि उसी के अनुसार अनुसरण करे, मन भी अपनी मनमानी न करे और सदैव शिव-संकल्प वाला हो। **अक्षभि: भद्रं पश्येम:** ध्यान रहे, ये आँखें सदा प्रकृति की सुन्दरता को देखें। ऐसा न हो शारीरिक सुन्दरता का शिकार हो अपने जीवन को गँवा दे। **कर्णेभि: भद्रं श्रृणुयाम;** ये कान, प्रकृति के मधुर संगीत, वेद-वाणी, ऋषि-मुनि आदि के शुभ-वचनों को ही सुनें न कि अभद्र, अश्लील संगीत, निन्दा-चुगली आदि को। यह वाणी सदैव प्रभु के गुणगान करे। त्वचा भी उसी के स्पर्श का अनुभव करे। ये सभी इन्द्रियाँ, ये गऊएँ कभी विषैली घास का सेवन न करें। सन्त लोग भी यही फरमाते हैं :

खाओ-पियो छको मत, बोलो चालो बको मत,

देखो-भालो तको मत।

स्वामी दयानन्द जी की भी यही शिक्षा है :

किसी भी पराई स्त्री को भरपूर दृष्टि से मत देखो।

हे आत्मन् सायंकाल होते ही इन गऊओं को अपने निरीक्षण में सुरक्षित घर ले आना। यह न हो कि बुरी संगत में पड़ शराब-खाने, जुए-खाने की ओर भटक जाएं। इतना ही नहीं रात्रि को सोने से पूर्व भी शयन-विनय के मन्त्रों-रूपी लोरी द्वारा ही सुलाना। प्रात: काल से रात्रि तक ही नहीं, जन्म से ले कर मृत्यु तक इन पर नियन्त्रण रखना, न जाने कब मति मारी जाए। पंजाबी भाषा में एक ऐसी ही कहावत है :

दूध फिटदियाँ, बुद्ध फिटदियाँ देर नहीं लगदी।

एक बार चूक हुई नहीं कि जीवन की सारी कमाई मिट्टी में मिल गई। सन्त-महात्मा एक बोध-कथा द्वारा हमारा मार्ग-दर्शन करते हैं :

एक महात्मा नित्य-प्रति प्रात: काल नदी पर स्नान करने जाते। आश्रम से नदी के मार्ग में एक वैश्या की आवाज सुन पड़ती, "ओ बाबा, क्या तुम्हारी दाढ़ी के बाल ज्यादा सफेद हैं या मेरे कुत्ते के बाल ? महात्मा बिना नज़र उठाये, मन्द-मन्द मुस्कराते, आश्रम की ओर बढ़ जाते। यह क्रम बहुत दिनों तक इसी प्रकार से चलता रहा। एक बार महात्मा बीमार पड़ गये। ईश्वर की न्यायव्यवस्था के अन्तर्गत वह मृत्यु के द्वार पर पहुँच गये। उन्होंने अपने प्रियतम शिष्य को बुलाया और आदेश दिया, "जाओ! वैश्या को बुला लाओ।" शिष्य को बहुत आश्चर्य और दु:ख भी हुआ कि ऐसी पवित्र आत्मा को जीवन की अन्तिम घड़ियों में यह क्या सूझ पड़ा ? परन्तु आदेश का पालन करते हुए वह वैश्या को आश्रम में बुला लाया। वैश्या की ओर देख, उस महात्मा ने कहा: **बेटी, तेरे प्रश्न का उत्तर देने का समय आ गया है। अब मैं निश्चय-पूर्वक कह सकता हूँ कि मेरी दाढ़ी के बाल तुम्हारे कुत्ते के बालों से अधिक सफ़ेद हैं।** इतना कहने के बाद ईश्वर का ध्यान करते हुए उन्होंने प्राण त्याग दिये। उस सन्त के इन शब्दों ने, वैश्या के जीवन को एक नई दिशा दे दी।

धन्य हैं हमारे वेदों वाले ऋषि, धन्य हैं हमारे स्वामी दयानन्द जी का ब्रह्मचर्य, उनकी कठोर तपस्या, उनका ईश्वर के प्रति समर्पण। जीवन में कितने ही प्रलोभन आये, उनके ब्रह्मचर्य को खंडित करने के लिए षड्यन्त्र रचे गये, कितनी ही बाधायें आईं किन्तु वह पुण्य आत्मा कभी विचलित नहीं हुई, कभी डगमगाई नहीं। कैसा अद्भुत था उनका अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण।

हे गोपाल! तुम इन ज्ञान-इन्द्रियों रूपी गऊओं को कभी स्वतन्त्र मत छोड़ो, स्वछन्द मत छोड़ो ऐसा न हो कि ये हरी भरी घास को छोड़ कर विषैली घास खाने लगें। ये चक्षु मानसिक सुन्दरता को भूल कर शारीरिक सुन्दरता के पीछे भागने लगें। ये कान, श्रोत, विद्वानों के सत् वचनों को छोड़ हार-सिंगार, अश्लील गानों की धुन सुनने के लिए लालायित हो उठें। न जाने कब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी व्याघ्र इन पर आ झपटें। एक मनुष्य की दशा तो बहुत ही दयनीय है क्योंकि यह एक नहीं पाँच-पाँच विषयों का दास है, रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श का। राजा भर्तृहरि वैराग्य-शतक में एक बहुत ही सुन्दर चित्रण करते हैं :

(शेष पृष्ठ 6 पर)

www.thearyasamaj.org

वैदिक ज्ञान परीक्षा का परिणाम घोषित

वैदिक शिक्षा परिषद फाजिलका द्वारा अक्तूबर में आयोजित वैदिक ज्ञान परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया। परीक्षा संयोजक वेदप्रकाश शास्त्री ने बताया कि यह परीक्षा प्राइमरी, मिडल, मैट्रिक, सैकण्डरी और कालेज स्तरीय पांच गुणों में आयोजित की गई। जिसमें 19 स्कूल और 4 कालेजों के 12 सौ छात्र/छात्राएं सम्मिलित हुए।

प्राइमरी ग्रुप में सर्वहितकारी विद्या मंदिर की गीतिका एवं काव्या क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा रेनबो डे बोर्डिंग स्कूल का रमणीक तृतीय स्थान पर रहा। मिडल ग्रुप में रेनबो डे बोर्डिंग स्कूल का बलदीप प्रथम तथा सरकारी मॉडल सी. से. कौडियांवाली का लवली द्वितीय और लविश अरोड़ा तथा मानिक तृतीय स्थान पर रहे। एस. डी. गर्ल्ज सी. से. स्कूल की आरती तथा कुलविंदर ने भी तृतीय स्थान प्राप्त किया। मैट्रिक ग्रुप में सरकारी मॉडल सी. से. स्कूल कौड़ियांवाली की कविता, शबीना कम्बोज एवं हिमांशी ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया। सैकण्डरी ग्रुप में इसी स्कूल में अजय कुमार, रवीन्द्र कुमार तथा गगनदीप सिंह ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सरकारी कन्या सी. से. स्कूल की दो सौ से अधिक छात्राएं सम्मिलित होने के आधार पर विशेष श्रेणी के अन्तर्गत सभी ग्रुपों में अलग-अलग परिणाम घोषित किया गया। मिडिल ग्रुप में योगिता माथुर, अंजलि तथा संदीप कौर क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय रहीं। मैट्रिक में कर्मजीत कौर, सर्वजीत कौर तथा कोमल ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया। सैकण्डरी ग्रुप में पूनम रानी अलका रानी तथा नीलम क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर रहीं।

कालेज ग्रुप में ज्योति बी. एड. कालेज फाजिलका के सुशान्त धीर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। डी.ए.वी. कालेज आफ़ एजूकेशन फाजिलका के निशा तथा गौरव क्रमशः द्वितीय, तृतीय स्थान पर रहे।

डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय अबोहर एम.एड. ग्रुप में सपना मनचन्दा, विकास कुमार, लखपत राय क्रमशः प्रथम, द्वितीय तृतीय रहे। इसी कालेज के बी.एड. ग्रुप में नीतू राग वीनू गोयल, ज्योति रानी ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया।

गोपीचन्द आर्य महिला कालेज अबोहर के बी.ए. ग्रुप में शिखा एवं सोनाली प्रथम, प्रिया द्वितीय तथा शिवांगी, खूशबू ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी 23 स्कूल, कालेजों के दो उच्चांक प्राप्त छात्र/छात्राओं को प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किया जायेगा।

वैदिक शिक्षा परिषद इन सभी छात्र/छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है। साथ ही इस परीक्षा में सहभागी सभी स्कूल/कालेजों के प्रमुखों एवं सहयोगी शिक्षकों तथा पर्यवेक्षकों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी सहयोग की कामना करती है।

-वेदप्रकाश शास्त्री

लुधियाना में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस समारोह

जिला आर्य सभा लुधियाना के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस समारोह का भव्य आयोजन रविवार 22 दिसम्बर 2013 को प्रातः 10.00 बजे से 1.00 बजे तक आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल समीप पुरानी सब्जी मंडी लुधियाना में किया जा रहा है। जिस में यज्ञ व भजनों के उपरान्त आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान डा. देव शर्मा जी वेदालंकार (दिल्ली) स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन पर प्रकाश डालेंगे। सभी आर्य सज्जन सादर आमंत्रित हैं।

राजेश शर्मा प्रधान

विजय सरीन महामंत्री

ऋषि दयानन्द चिन्तन की क्रान्ति धाराएं

-डा. भवानीलाल भारतीय, 315 शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

यदि ऋषि दयानन्द की उनके समकालीन या पूर्ववर्ती धर्माचार्यों से तुलना करें तो प्रथमतया हम देखते हैं कि उनके विचार उनका दर्शन और चिन्तन पूर्ण तथा भारतीय पुरातन स्त्रोतों से विकसित हुआ था। उनके पूर्ववर्ती राजा राममोहन राय ने यद्यपि एकेश्वरवाद का प्रतिपादन किया तथा मूर्तिपूजा आदि कर्मकाण्ड़ों को अनावश्यक तथा हानिकारक बताया, तथापि विश्लेषकों का मानना है कि उनका एकेश्वरवाद इस्लाम में प्रतिपादित एकेश्वरवाद (अल्लाह की सर्वोपरि एकता) से अवश्य प्रभावित था। उन्होंने मूल अरबी में कुरान का गहन अध्ययन किया था। वे बहु अधीत तथा बहु भाषाविज्ञ थे। यही कारण है कि उन्होंने बाइबिल को मूल हिब्रू में पढ़ा था और वे ईसाई नैतिक सिद्धान्तों के प्रशंसक तथा समर्थक थे अंग्रेजी के अतिरिक्त उन्होंने लैटिन ग्रीक तथा हिब्रू भाषाओं का गहन अध्ययन किया था। जहां तक उनके अनुवर्ती ब्रह्म समाज के द्वितीय आचार्य ऋषि कल्प देवेन्द्रनाथ ठाकुर का प्रश्न है, यद्यपि उनका शास्त्रीय और संस्कृत ज्ञान बहुत विशद नहीं था, तथापि उपनिषदों के स्वाध्याय से वे आर्यों के अध्यात्मवाद तथा ब्रह्मैक्यवाद के तत्त्व को अधिकृत कर चुके थे।

इन दोनों से भिन्न स्वामी दयानन्द के ही समकालीन तथा मित्र तुल्य सहृदय केशवचन्द्र सेन यद्यपि स्वयं को ब्राह्मता अनुयायी कहते थे किन्तु वे ईसाइयत से अत्यधिक प्रभावित थे। विश्लेषकों का मानना है कि केशव बाबू ने ईसाई विश्वासों और कर्मकाण्डों को ब्रह्म समाज में प्रविष्ट कराने को भरसक चेष्टा की थी, यद्यपि उन्हें इच्छित सफलता नहीं मिली। इसके विपरीत स्वामी दयानन्द तो अपनी मातृभाषा गुजराती के अतिरिक्त संस्कृत का तलस्पर्श ज्ञान रखते थे। इसलिए उनके विचारों और चिन्तन का यदि कोई मूल स्त्रोत है तो वह संस्कृत में लिखे गये आर्यों के शास्त्रीय ग्रन्थ ही थे। दयानन्द की दृष्टि और चिन्तन की विशदता एवं व्यापकता का पता इसी बात से लगता है कि यद्यपि वे पश्चिमी देशों में स्वीकार्य हुए प्रजातांत्रिक विचारों तथा फ्रैंच क्रान्ति से उत्पन्न मनुष्य मात्र की एकता, स्वतन्त्रता तथा परस्पर की बंधुता (Equality, Liberty and Fratenity) के मूल विचार से सहमत थे तथापि यह नहीं कहा जा सकता कि ये नवीन भाव और विचार उन्होंने जेक्स स्टुअर्ट मिल तथा बैन्थम से लिए अथवा रूसो एवं वाल्तेयर के क्रान्तिकारी विचारों ने उन पर प्रभाव डाला था। प्रजातांत्रिक भावना तथा विश्व मानव की एकता के उदार विचार उनके स्वतःस्फूर्त थे, तथापि उनकी मूल प्रेरणा में वेद, उपनिषद, वैदिक दर्शन आदि पुरातन शास्त्री ही थे।

दयानन्द के परवर्तियों जितने देशभक्त, राष्ट्रकर्मा तथा समाज सुधारक हुए उन्होंने तो पश्चिम की देन को मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया ही है। चाहे वे स्वामी विवेकानन्द अथवा योगी अरविंद हों, अथवा महात्मा गांधी या कोई अन्य राष्ट्रनेता। जवाहरलाल नेहरू ने इस तथ्य को अपनी शैली में व्यक्त किया ही था-मैं तो शिक्षा से अंग्रेज तहजीब से मुसलमान हूँ। हिन्दू घर में मेरा जन्म तो संयोग (By accident) से ही हुआ था। दयानन्द के चिन्तन की सर्वोपरि महत्ता तो इसी बात को लेकर है कि उनका चिन्तन और जीवनदर्शन शतप्रतिशत भारतीय है तथा भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत है। उन्होंने पश्चिम से कुछ ग्रहण किया हो, सो बात नहीं है।

स्वामी दयानन्द के क्रान्तिकारी की एक अन्य धारा है-वेदादि सत्य शास्त्रों में उनका प्रगाढ़ विश्वास तथापि उन्होंने लिखा है कि संस्कृत में लिखे सभी ग्रन्थ समान नहीं हैं और न उन्हें प्रामाणिक कहा जा सकता है। जहां तक वेदों का प्रश्न है वे इस बात से सहमत हैं कि भारत के सभी दार्शनिक, धर्माचार्य तथा अध्यात्म वेत्ताओं ने वेद के प्रति अपार वृद्धि व्यक्त की है। यदि वेदान्त दर्शन ने वेदों को ईश्वर प्रदत्त ज्ञान (शास्त्र योनित्वात्) कहा तो अन्य दार्शनिक कणाद की राय में वेद के परम पुरुष का वाक्य मान कर प्रमाणिक कहा-तद् वचनात् आम्नायस्य प्रमाण्यम्-वैशेषिक दर्शन। वेदानुयायी धर्माचार्यों की बात को रहने दें, तथापि यह देखने में आता है कि मध्यकालीन सन्तों ने भी वेद प्रतिपादित शाश्वत सत्यों से कभी इन्कार नहीं किया। कबीर के विचार से वेद करते नहीं हैं झूठे, झूठा जो न विचारे इस प्रकार यद्यपि वेदों के सार्वत्रिक प्रमाण होने के तथ्य को सर्वत्र स्वीकार किया गया तथापि मध्यकाल में सत्यासत्य विवेक के अभाव के कारण संस्कृत में लिखे प्रत्येक ग्रन्थों को शास्त्र का प्रमाण तथा आचरणीय स्वीकार कर लिया।

दयानन्द का इस सम्बन्ध में विचार कुछ भिन्न है वे कहते हैं कि मध्यकाल में धर्म के नाम पर जो मिथ्या कर्म-काण्ठ, ब्राह्म आचरण आदि का प्रचलन हो गया था उसे प्रतय तथा बल देने वाले जो ग्रन्थ स्वार्थी लोगों ने बनाये उन्हें कभी स्वीकार नहीं किया जा सकता। इस प्रकार वे पुराणों, तंत्रों तथा अन्य ग्रन्थों को मान्य नहीं करते जो कालान्तर में प्रचलित हो गये थे। मात्र संस्कृत में लिखा होने से ही कोई ग्रन्थ पूज्य या प्रमाण नहीं हो सकता, यह उनकी हद मान्यता थी।

www.thearyasamaj.org

पृष्ठ 4 का शेष-हे आत्मन्, सावधान.....

कुरङ्ग-मातङ्ग-पतङ्ग-भृङ्ग, मीना हता पञ्चभिरेव पञ्च।

एकः प्रमादी सः कथं न हन्यात्, यः सेवते पञ्चभिरेव पञ्च॥

(राजा भर्तृहरि कृत वैराग्य शतक)

अर्थात् हिरण, हाथी, पतंगा, भंवरा और मच्छली एक-एक विषय के दास हैं जिस कारण उन्हें मृत्यु का शिकार होना पड़ता है। परन्तु एक प्रमादी मनुष्य तो पाँचों विषयों का यानि रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श का दास है, इसलिए उसकी दशा तो बहुत ही दयनीय है।

जब तक आत्मा रूपी गोपाल शक्तिशाली होता है, आत्मा का आदेश अन्तःकरण और सब ज्ञान-इन्द्रियाँ मानती हैं और व्यक्ति अपने लक्ष्य को नहीं भूलता। परन्तु कभी-कभी पूर्व-जन्मों के संस्कारों के फलस्वरूप, आजकल के विषैले, दूषित वातावरण के कारण, मन और ज्ञान-इन्द्रियाँ अपनी मनमानी करने लगती हैं। आत्मा चाहते हुए भी, कुछ कर नहीं पाती, असहाय सी हो जाती है। ऐसे में एक ही उपाय रह जाता है और वह है प्रभु की शरण। प्रभु के प्रति समर्पित होते हुए आत्मा पुकार उठती है।

ओ३म् पवमानः पुनातु मा, क्रत्वे, दक्षाय, जीवसे।

अथो अरिष्टताजये॥ अथर्ववेद॥

हे पवित्रता के अनुपम, अद्वितीय, दिव्य स्त्रोत प्रभो ! मुझे पवित्र कर दो, निर्मल कर दो जिससे मैं पवित्र हो कर सच्चा क्रतुमान बन सकूँ यानि मेरी प्रज्ञा और कर्म, मेरी बुद्धि और मेरा कार्य दोनों पवित्र हो जायें। जैसे प्रज्जवलित अग्नि में ईंधन डालने से, सारी की सारी ईंधन भस्मासात हो जाती है, मुझमें भी ऐसी ज्ञान-अग्नि प्रज्जवलित कर दें कि मेरे सब अशुभ विचार, दुष्कर्म, पाप कर्म, उस ज्ञान-अग्नि में जलकर भस्म हो जायें, नष्ट हो जायें। झरने की भांति भीतर से ही ज्ञान फूटने लगे, ध्यान पकने लगे।

हे पवमानः ! हे प्रभु ऐसी कृपा करो कि मैं आपके द्वारा पवित्र हो, मानसिक और आत्मिक बल को प्राप्त कर, अपनी इन्द्रियों का स्वामी बन जाऊँ। आपके आनन्द की अनुभूति कर सकूँ।

ओ३म् आनन्दम्, ओ३म् आनन्दम्।

ओ३म् आनन्दम्, ओ३म् आनन्दम॥

ऋषि निर्वाण (दीपावली) पर्व मनाया गया

दिनांक 10 नवम्बर 2013 दिन रविवार को वेद मन्दिर न्यू अकालगढ़ कालोनी (ताजपुर मझीरी) घरोटा मार्ग पठानकोट में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का निर्वाण दिवस मनाया गया।

प्रातः 7 बजे से 8 बजे तक गायत्री महायज्ञ किया गया यज्ञ के ब्रह्मा पं: राजेन्द्र व्रत शास्त्री (भजनोपदेशक) पुरोहित आर्य समाज समराला रहे।

यज्ञ के पश्चात् 8. बजे से 9 बजे तक आये हुये महानुभावों के मनोहर ऋषि गीत हुये, ऊषा वसुधा जी के भजन हुए।

तत्पश्चात् 9 से 10 बजे तक शास्त्री राजेन्द्र व्रत जी ने अपने मधुर भजनों द्वारा ऋषि गाथा का गुणगान किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता इस वेद मन्दिर के संचालक आचार्य वेद व्रत शास्त्री जी ने की। यह कार्यक्रम प्रातः 7 से लेकर 10 बजे तक चला। कार्यक्रम के पश्चात् प्रातः राश का भी प्रबन्ध किया गया।

इस अवसर पर-स्वधा, यशोधा, वरदा, पुरुषोत्तम लाल यशपाल, रमेशकुमार, श्रुति व अन्य धर्मिक सज्जन भी उपस्थित थे। **-मन्त्री कुलदीप राज मौर्य**

पृष्ठ 2 का शेष-ईश्वर कोई भौतिक.....

उत्तर-यदि परमात्मा चैतन्य अर्थात् सर्वज्ञ न होता तो क्या ज्ञान हीन प्रकृति ने मानव मस्तिष्क का निर्माण कर पाता ? इससे सिद्ध हो जाता है कि सर्वज्ञ ईश्वर ने ही करोड़ों तन्तुओं-कोशिकाओं के द्वारा जीवन को सोचने-समझने के लिये उनके मस्तिष्क के डिजाईन प्रस्तुत कर दिया और उनको स्वाभाविक ज्ञान भी दे दिया। क्योंकि जीवात्मा अल्पज्ञ, अल्प सामर्थ वाला है। और जो सृष्टि की आदि में विद्या के ग्राहक ऋषि थे उन्हें नैमित्तिक ज्ञान के रूप में वेदों के साथ भाषा का भी ज्ञान दे दिया।

अतः ईश्वर तो स्वयं विज्ञान स्वरूप है उसके लिये मस्तिष्क की आवश्यकता ही नहीं होती।

यदि ईश्वर ने परमाणु के गर्भ में छिपे सृजन कारक अतिसूक्ष्म गतिमान् 'कण' को जो द्रव्यमान बनाने वाला है, वैज्ञानिकों ने खोज न किया होता, तो उन्हें कैसे ज्ञात होता कि इधर-उधर तैरने वाले परमाणुओं को अभिष्ट ठोस प्रदान करता है।

इस सम्बन्ध में 'कणाद' ऋषि एवं वेद ने पहले ही घोषणा कर दी थी।

तात्पर्य यह कि ईश्वरीय वेद के एक मंत्र में सृष्टि के सारे रहस्य छिपे हुए हैं, यथा-

''ऋतंच सत्यंचा भी द्धात्तपसोध्यजायत।

(ऋ० मं. 10,190,1-31)

अर्थात्-सृष्टि के पूर्व सर्वप्रथम परमेश्वर से ही तेज उत्पन्न हुआ। (तेज में सत् रज, और तम के परमाणु मिले हुए थे। वेदों में बराबर अग्नि की ही महिमा का वर्णन है)

जब उसमें ऋतकी क्रिया उत्पन्न हुई तब उसके परमाणुओं में से एक सृजन कारक अणु बन गया, जिससे अन्य परमाणु द्रव्यमान होकर सारी सृष्टि के कार्य-कारण बन गये अतः प्रकृत्ति के परमाणु स्वयं तो कुछ नहीं कर सकते, जब तक कि उनसे श्रेष्ठ-सर्वशक्तिमान उन्हें एकत्रित कर विभिन्न सृष्टियों के कार्यों में प्रेरित नहीं करता।

''ऋषि दयानन्द ने तत्व विचार विषय को निरुपित किया है, उन्होंने सर्वाधिक लगभग छियालीस वैशषिक सूत्रों को अर्थ सहित उद्धत किया है। परमाणु के बारे में सामान्य उक्ति है कि किसी भी झरोखे की जाली से आने वाली धूप में सूर्य किरणों से उड़ते हुए दिखने वाले सूक्ष्म कणों का एक का साठवाँ भाग परमाणु कहलाता है। यह प्रकृति का सूक्ष्मतम अंश है। ऋषि दयानन्द ने कणाद दर्शन के परमाणु तथा कपिल दर्शन के प्रकृति का समन्वय करते हुए 'प्रकृति के परमाणु' इस पद का प्रयोग किया है। परमेश्वर अदृश्य है। आत्मा भी अदृश्य है और परमाणु भी दिखता नहीं है। परमेश्वर जब सृष्टि रचता है तो उसके वैज्ञानिक नियम और बुद्धिपूर्वक रचना को देखकर उसके होने का ज्ञान स्वाभाविक रूप में हो जाता है और जब आत्मा शरीर धारण करता है तो उसके ज्ञातृत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्व को देखने से उसका भी बोध हो जाता है। और जब किसी पत्थर आदि पदार्थो को तोड़कर देखा जाता है तो सिद्ध हो जाता है कि उन सबका गठन अणु परमाणुओं के समूहों से हुआ है। चैतन्य अभौतिक है, पर वही मन, बुद्धि को पकड़कर शिक्षा से विद्याध्ययन करके सारे संसार का कार्य कर रहा है।

भजन संध्या का आयोजन

वैदिक सत्संग परिवार पंजाब कल्याण समिति कपूरथला की ओर से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 24-11-2013 दिन रविवार को वैदिक भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें आर्य जगत के युवा भजनोपदेशक श्री दिनेश पथिक अमृतसर व सरदार सुरेन्द्र सिंह गुलशन व श्री अरूण शुक्ला जालन्धर, श्री नरेन्द्र सूद कपूरथला के मधुर भजनों का आर्य जनता ने भरपूर आनन्द लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सरदार जसवीर सिंह अरोडा रहे। गणमान्य मनोज आर्य, श्री तेजवीर सिंह, चन्द्रहास आर्य, श्री बृजमोहन, इन्द्रजीत सपोवाली, श्री कमल जी, श्री राजेश कुमार उपस्थित रहे। अन्त में आचार्य दिवाकर भारती मोगा ने आशीर्वाद प्रदान कर सबके लिए सुख शान्ति की कामना की। अन्त में प्रधान इन्द्रजीत पसरीचा जी ने सभी का धन्यवाद किया। प्रसाद वितरण एवं शान्ति पाठ से सभा का समापन हुआ। **-नरेन्द्र सूद प्रचार मन्त्री**

www.thearyasamaj.org

बाल दिवस मनाया

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड़ लुधियाना में 14 नवम्बर को बाल दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया जिसमें प्री-नर्सरी से के-जी कक्षा तक के बच्चों ने मिलकर लकड़ी की काठी गाने पे डांस किया। फिर इसके पश्चात् पहली कक्षा से दसवीं कक्षा तक के बच्चों ने मिलजुल कर स्किटस, डांस, कविता व चाचा नेहरू के जन्म दिन का गीत गाकर सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर स्टेज सम्भालने का काम मैडम आदर्श बाला ने किया व बच्चों को चाचा नेहरू जी के जीवन के बारे में बताया और स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने भी बच्चों को बताया कि नेहरू जी हमारे देश के पहले प्रधानमन्त्री थे और ये छोटे-छोटे नन्हें-नन्हें बच्चों से बहुत प्यार करते थे और इनको सब फूलों में से गुलाब के फूल अति प्रिय थे। बाल दिवस के उपलक्ष्य में समारोह के उपरान्त बच्चों के लिए खाने-पीने का उत्तम प्रबन्ध था।-**रेनूँ बहल**

आर्य समाज जीरा में ऋषि दयानन्द का निर्वाण उत्सव मनाया गया

आर्य समाज जीरा ने ऋषि दयानन्द निर्वाण उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया। सबसे पहले वेद के पवित्र मंत्रों से हवन-यज्ञ पं० किशोर कुणाल पुरोहित जी ने करवाया। उसके पश्चात् समाज के वयोवृद्ध प्रधान श्री ओम प्रकाश ग्रोवर ने महर्षि दयानंद के जीवन पर विस्तार पूर्वक रोशनी डाली। उसके पश्चात् ऋषि दयानंद का अंतिम दृश्य कविता के रूप में प्रधान जी ने सुनाया जिसको सुनकर लोगों की आँखों से आंसू बहने लगे। अन्त में प्रधान जी ने श्रद्धांजलि अर्पित की। आर्यसमाज के हॉल में काफी स्त्री पुरुष पधारे हुए थे और सबने ऋषि को श्रद्धांजलि अर्पित की। **-मंत्री आर्य समाज जीरा**

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला में वेद प्रचार समारोह

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज बरनाला के प्रांगण में पावन वेद ज्ञान से निसृत ईश का गुणगान कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रवचनकर्त्ता श्रद्धेय स्वामी सूर्यदेव जी महाराज एवं भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री रणजीत शास्त्री द्वारा सम्पन्न करवाए गए यज्ञ से हुआ जिसमें कॉलेज व स्कूल के स्टॉफ के साथ छात्राएं भी सम्मिलित हुई। स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती रंजना मैनन ने भजन प्रस्तुत कर वातावरण में भक्ति भाव का संचार कर दिया। कॉलेज प्रबंधक समिति के महासचिव एवं आर्य प्रतिनिधि पंजाब के अन्तरंग सदस्य श्री भारत भूषण मैनन ने इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम बरनाला नगर में वेद ज्ञान के प्रसार हेतु आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला के अन्तर्गत युवा पीढ़ी को नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने का सत्प्रयास है। आर्य समाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी ने अपने मधुर भजनों से सभी श्रोताओं को भाव भिवोर कर दिया। इसके पश्चात स्वामी सूर्यदेव जी ने अत्यन्त रोचक शैली में प्रस्तुत प्रवचन में छात्राओं को ईश्वर की महिमा से परिचित कराया। कॉलेज प्राचार्य डॉ. नीलम शर्मा ने स्वामी सूर्यदेव जी एवं श्री जगत वर्मा जी एवं इस अवसर पर पधारे अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन छात्राओं में आध्यात्मिकता एवं नैतिकता को बढ़ावा देने हेतु आधुनिक समय की मांग है। गत वर्ष जिले में आयोजित हुई भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को इस समारोह में पुरस्कृत किया गया। अतिथि देवो भव: के भावानुरूप महाविद्यालय की ओर से स्वामी सूर्यदेव जी एवं श्री जगत वर्मा जी को स्मृति भेंट की गई।

इस अवसर पर प्रबन्ध समिति के प्रधान डॉ. सूर्यकान्त शोरी, महासचिव श्री भारत भूषण मैनन, वरिष्ठ उपप्रधान श्री केवल जिंदल, श्री भारत मोदी, श्री प्रदीप गोयल, श्री बसन्त शोरी, श्री हरमेल जोशी, श्री महेन्द्र खन्ना, श्रीमती रंजना मैनन, श्री एस. वशिष्ठ एवं श्रीमती अनीता वशिष्ठ तथा अन्य गणमान्य व्यक्तित्व विशेष रूप से उपस्थित हुए।

-डॉ. सुशील बाला

जीवेम शरदः शतं

गतांक से आगे

चीन में वृद्धावस्था को शानदार एवं ईश्वरप्रदत्त एक वरदान माना जाता है। उनकी कामना सदैव दीर्घ जीवन की होती है। प्राचीन भारतीय ऋषियों ने इस संसार को कर्मभूमि एवं संपूर्ण सुखों का घर मानते हुए पुरुषार्थी बनकर, अदीन होकर सौ वर्ष तक जीवित रहने की कामना व्यक्त की है।

जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं,
प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं,
कुर्वनेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

मूर्धन्य जराविशेषज्ञों ने भी वृद्धावस्था पर किए गए अपने शोध निष्कर्ष में बताया है कि लंबी उम्र तक सक्रिय दीर्घ जीवन जीने वालों के पीछे मात्र वंशानुगत कारण ही नहीं, वरन् मानसिक प्रसन्नता, कड़ी मेहनत, दीर्घजीवी होने की प्रबल इच्छाशक्ति तथा संतुलित आहार-विहार है। आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं एवं संतुलित आहार से विश्वभर में वृद्धों की संख्या में वृद्धि हुई है। वैज्ञानिकों के अनुसार सामान्यता मनुष्य की अधिकतम आयु 110 से 115 वर्ष तक हो सकती है।

जराविज्ञान के अनुसार पूर्ण दीर्घायु प्राप्त अधिकतर सीधे-सादे वे लोग हैं, जो गाँवों में निवास करते हैं। इनमें से अधिकांश बेहद प्रसन्नचित्त और स्वस्थ नज़र आते हैं और अपनी कार्यक्षमता में नौजवानों को भी पीछे छोड़ देते हैं। दीर्घ आयु प्राप्त करने, अधिक दिनों तक जीने के लिए पहली शर्त यह है कि व्यक्ति को कोई न कोई रचनात्मक कार्य करना चाहिए और अपने आप को व्यस्त रखते हुए हर परिस्थिति का प्रसन्नतापूर्वक सामना करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। दूसरी शर्त है-दिनचर्या नियमित हो और प्राकृतिक जीवन जिया जाए। तीसरी आवश्यक और अनिवार्य शर्त यह है कि खानपान नपा-तुला, सात्विक और संतुलित हो। कार्यव्यस्तता और नियमितता ही व्यक्ति को मस्ती प्रदान करती और सफलता की मंज़िल तक पहुँचाती है। वृद्धावस्था से बचने और दीर्घायु प्राप्त करने के लिए तीन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए-

(1) शारीरिक स्वास्थ्य, (2) आर्थिक आत्मनिर्भरता और (3) मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य

आर्य समाज जालन्धर अड्डा होशियारपुर जालन्धर का वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का 127 वां वार्षिक उत्सव दिनांक 1-12-2013 रविवार को स्वास्ति याग के मन्त्रों की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। सप्ताह भर चलने वाले इस वार्षिक उत्सव में आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान महात्मा चैतन्यमुनि जी ने ज्ञान की अमृत वर्षा की तथा माता सत्याप्रिया जी याति व श्री राजेश प्रेमी जी के सुन्दर भजन हुए। रविवार सुबह 8:00 से 10:00 बजे जक यज्ञ हुआ जिसमें बहुत से यजमानों तथा श्रद्धालुओं ने आहुति अर्पित करके पुण्यार्जित किया। यज्ञ के पश्चात श्री अशोक सरीन जी ने ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण के पश्चात मुख्य आर्य सम्मेलन आरम्भ हुआ। इस सम्मेलन में श्री राजेश प्रेमी जी ,श्री अनिल गुप्ता जी श्री नरेन्द्र सूद जी कपूरथला, श्रीमती नीलम सेठ जी के सुन्दर भजन हुए। इस अवसर पर कपूरथला से आए आचार्य देवराज जी ने कहा कि हमारी वैदिक संस्कृति महान है, इस महान संस्कृति को अपनाकर हम अपने आपको गौरवशाली समझें। आर्य प्रतिनिधि सभा से आए श्री सुरेश शास्त्री जी ने कहा कि हम आर्य बनें और कृण्वन्तो विश्वमार्यम के महान लक्ष्य को पूरा करने का प्रयास करें। इस अवसर पर महात्मा चैतन्यमुनि जी ने कहा कि हम अपने जीवन में यश कमाएं ताकि इस संसार से जाने के बाद भी हमारा नाम रहे। इस सम्मेलन की अध्यक्षता माता आनन्दायति जी ने की तथा सभी को अपना आशीर्वाद दिया। अन्त में श्री सोहन लाल जी सेठ ने आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया तथा इस वार्षिक उत्सव की सफलता के लिए प्रबन्धक कमेटी के सदस्यों का आभार प्रकट किया। मंच संचालन स्कूल के प्रधानाचार्य श्री एस. के. भारद्वाज जी ने किया। इस अवसर पर सर्वश्री विनोद सेठ, रमेश कालड़ा, ओम प्रकाश अरोड़ा, बाल कृष्ण अरोड़ा, चतुर्भुज मित्तल, प्रकाश चन्द्र सुनेजा आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तथा इसके पश्चात भव्य ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

-विनोद सेठ प्रधान आर्य समाज

www.thearyasamaj.org

 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

वेद वाणी

अजीतये अहतये पवस्व, स्वस्तये सर्वतातये बृहते।
तदुशन्ति विश्व इमे सखायस्तदहं वश्मि पवमान सोम॥
ऋ० ९/९६/४

विनय-हम चाहते हैं कि हम अजित रहें, कभी हार न खाएँ; हम अहत रहें, कभी मारे न जाएँ; हमारा कल्याण ही हो, कभी हमारा कोई अकल्याण न हो। परन्तु इस सब के लिए, हे सोम! हम तुम्हारे रस के भिक्षुक हैं। तुम्हारा रस मिल जाय तो यह और सब-कुछ हमें स्वयमेव मिल जाय। जैसे कि ग्रीष्म के बाद मेघवृष्टि उद्यान व खेत की सब वृक्ष-वनस्पतियों को जिस समय सजीव करती है तो उनमें सरसता, उनमें हरियाली, उनमें नवपल्लवों का फूटना, उनमें पुष्प और फल का आना आदि सब-कुछ उस एक वर्षा रस के पा जाने से हो जाता है, उसी तरह यह संसाररूपी महा उद्यान भी, हे बरसने वाले सोम! तुम्हारा रस पाकर ही नाना तरह से फलता-फूलता और जीवित रहा करता है। इस संसारोद्यान का प्रत्येक जीवरूपी वृक्ष तुमसे जीवन पाकर ही नाना प्रकार से आत्म-विकास पा रहा है। हम किसी भी प्रकार की उन्नति चाहें, किसी भी दिशा में आत्म-विकास पाना चाहें, सदा हमें जिस एक वस्तु की ज़रूरत है, वह है तुमसे मिलने वाला जीवन-रस, सोम-रस। इसलिए, हे पवमान सोम! संसार के ये सब मेरे मनुष्य-साथी तुमसे यह जीवन-रस माँग रहे हैं-तुमसे यही चाह रहे हैं। मैं तुमसे इसी की माँग मचा रहा हूँ। तो हे सोम! अब तुम मेरे लिए क्षरित होओ-मेरे इन सब मनुष्य-सखाओं के लिए क्षरित होओ; हमारी अजीति, अहति, स्वस्ति आदि सब कामनाओं को पूरा कर डालने के लिए क्षरित होओ। नहीं, नहीं तुम तो हे अमृत बरसाने वाले! इस सब चर, अचर, बृहत् संसार के लिए ही अपनी अमृत-वर्षा का दान करो। ऐसा बरसो कि तुम्हारे अमृत से सींचे जाते हुए इस विशाल ब्रह्माण्ड में सब जीवों, सब प्राणियों की सदा ठीक तरह से सर्वविध सर्वोन्नति व सर्वोदय ही होता जाए, और इस तरह सब जगत् और प्राणीमात्र का अमृत-सिंचन करते हुए ही तुम मुझको, इस अपने एक तुच्छ प्राणी को भी अपना यह अमृत-रस प्रदान करो। ज़रा देखो, यह सब संसार इस अमृत-रस को पाने के लिए कैसा व्याकुल हो रहा है ! मैं इसके लिए कैसा तड़प रहा हूँ !

साभार-वैदिक विनय, प्रस्तुति-रणजीत आर्य

शोक प्रस्ताव

डी.एम.कालेज मोगा में एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की बड़ी बहन स्वर्गीय श्रीमती सरला शर्मा जी के गत दिनों नई दिल्ली में देहावासन पर गहरा दुख व्यक्त किया गया और उनकी आत्मिक शान्ति के लिये प्रभु से प्रार्थना की गई। इस प्रार्थना सभा में डी.एम.कालेज की प्रबन्धकृर्त कमेटी, समूह स्टाफ, छात्र एवं प्रिंसीपल ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिये दो मिनट का मौन धारण किया तथा परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति एवं सदगति के लिये प्रार्थना की गई।

कई अन्य संस्थाओं से भी शोक प्रस्ताव प्राप्त हुये हैं जो इस प्रकार से हैं:- जिला आर्य सभा लुधियाना, आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना, आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना, आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना, आर्य माडल स्कूल बटिंडा, आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बटिंडा, श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला, आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला, स्वामी गंगागिरी आर्य महिला कालेज रायकोट, श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला। इसके साथ ही अन्य भी कई आर्य शिक्षा संस्थाओं की तरफ से भी शोक प्रस्ताव प्राप्त हुये हैं।

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्वयनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।